डॉ॰ पी॰ एस॰ पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री॰ संजय बापू आडके का "डॉ॰ शिवप्रसाद सिंह के अलग अलग वैतरणी उपन्यास का अध्ययन" लघुशोध प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

३० जून, १९९५
कोल्हापुर

डॉ॰सौ॰ अवन्तिका गो॰ कुलकर्णी,
निवृत्त रीडर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय,
सांगली॰

- प्रमाणपत्र -

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री संजय बापू आडके ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्॰फिल्॰ (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत "डॉ॰ शिवप्रसाद सिंह के "अलग अलग वैतरणी" उपन्यास का अध्ययन" शीर्षक लघु-शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। इसमें प्रस्तुत विचार एवं विवेचन मेरी जानकारी में मौलिक हैं। प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

A.G.Kulkarni

सांगली।
दिनांक : 30-6-95

(डॉ॰सौ॰ अवन्तिका गो॰कुलकर्णी)
शोध निर्देशक॰

...

- प्रज्ञापन -

यह लघु-शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम॰फिल॰ के लघु-शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

कोल्हापुर ।
दिनांक : 30/8/84

(संजय आवळे)
शोध-छात्र॰

...

- प्रा क थ न -

(शिवप्रसाद सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक कथाकार सशक्त हस्ताक्षर, बहुमुखी प्रतिभा के धनी और कथाकार के रूप में विशेष प्रसिध्द है।) उनका साहित्य अनुठी रचनाओं के साथ साथ, तमाम सामाजिक समस्याओंकी सहज अभिव्यक्ति है।

मु॰ प्रेमचन्द के बाद ग्रामीण जीवन का सही चित्रण प्राय: लुप्त हो गया था लेकिन हिन्दी नयी कहानी के विशिष्ठ कथाकार शिवप्रसाद सिंह जी का ("अलग अलग वैतरणी" उपन्यास पढने के बाद आम आदमी का जीवन्त दस्तावेज प्रस्तुत करनेवाले पचासोत्तर हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर शिवप्रसाद सिंह जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को जान लेने की लालसा निर्माण हुई।) उनके साहित्य ने मेरे मनमें घर बना लिया। उनके कुछ उपन्यास और कहानियोंने मुझे बेहद प्रभावित किया। इसीलिए मैंने निश्चय किया कि सिंह जी के "अलग अलग वैतरणी" उपन्यास का अध्ययन करना चाहिए। साथ ही साथ उनके व्यक्तित्व का ज्ञान लेना चाहिए।

दूसरी तरफ मुझे इस लघु-शोध-प्रबन्ध के विषयचयन के पीछे डॉ॰ गो॰रा॰ कुलकर्णी तथा डॉ॰सौ॰ अवन्तिका कुलकर्णी जी की प्रेरणा भी आधारभूत रही है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध का विषय है - "डॉ॰ शिवप्रसाद सिंह के अलग अलग वैतरणी उपन्यास का अध्ययन।"

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न थे।

(१) डॉ॰ शिवप्रसाद सिंह जी का व्यक्तित्व किस प्रकार का था और उनका पूरा जीवन किस तरह बीता ?

(२) उन्होंने अपने जीवन में किस प्रकार के साहित्य की निर्मिती की है ?
(३) उन्होंने कौन कौनसी औपन्यासिक कृतियाँ लिखी ?
(४) "अलग अलग वैतरणी" में कौन कौनसी समस्याएँ चित्रित हुई है ?
(५) उपन्यास - कला की दृष्टि से अलग अलग वैतरणी उपन्यास कहाँ तक मेल खाता है ?

इन सभी सवालों के जवाब पाने की कोशिश प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध में की है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध पांच अध्यायो में विभाजित है। प्रथम अध्याय में डॉ॰ शिवप्रसाद सिंह जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है। किसी भी साहित्यकार की कृति को पढने से पहले उनके व्यक्तित्व पर एक नजर डालनी चाहिए। सिंह जी के व्यक्तित्व निर्माण में किन-किनका योगदान रहा इसका वर्णन तथा सिंह जी के रचना संसार का संक्षेप में विवरण दिया गया है॥ उन की कहानियाँ उपन्यास नाटक तथा उनका अन्य प्रकाशित साहित्य इन समीक्षा मूल्यांकन किया गया है और उनकी विशेषताएँ संक्षेप में बताई गयी है।

द्वितीय अध्याय में सिंह जी के प्रकाशित औपन्यासिक कृतियों का संक्षेप में परिचय दिया गया है।

तृतीय अध्याय में "अलग अलग वैतरणी" उपन्यास में चित्रित चरित्रों का चित्रण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में "अलग अलग वैतरणी" उपन्यास में कौन कौनसी समस्याएँ उजागर हुई है इसका विवरण किया है।

पंचम अध्याय में अलग अलग वैतरणी" उपन्यास की उपन्यास काल की दृष्टिसे समीक्षा की गयी है॥

इन महत्वपूर्ण पांच अध्यायों के बाद उपसंहार है। यह इस पूरे लघु-शोध-प्रबन्ध का सारांश है। पांच अध्यायों के अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष मिले उसका विविरण इसमें किया गया है।

प्रबन्ध के अंत में परिशिष्ट दिया गया है। इस में संदर्भ ग्रंथ सूची और सहायक ग्रंथ सूची को क्रमबध्दता से दिया गया है। प्रत्येक संदर्भ ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्मरण भी दिया गया है।

इस लघु-शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा आद्य कर्तव्य है।

यह लघु-शोध-प्रबन्ध मेरी प्रेरणास्रोत मार्गदर्शिका प्राध्यापिका डॉ॰सौ॰ अवन्तिका गो॰ कुलकर्णी "मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय", सांगली के निर्देशन में लिखा गया है। यदि आपका मार्गदर्शन न मिल पाता तो यह कार्य असंभव बन जाता। आपके पास ज्ञान का सागर है। मैंने तो उस सागर में से कुछ ही बूंदों को पा लिया है। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद आपने बार बार प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मुझे अमोल सहायता की इसलिए मैं आपका हमेशा हमेशा के लिए ऋणी हूँ। आप के आत्मीय निर्देशन ने इस शोध कार्य के अंतर्गत आनेवाली कठिनाइयों को कभी अनुभव नहीं होने दिया तथा इस प्रबन्ध की एक एक पंक्ति सूक्ष्मता से देखने का कार्य किया। यदि आप बार बार मुझे सजग न करती तो शायद यह लघु शोध प्रबन्ध अधूरा रह जाता। आपका शान्त स्नेह स्वभाव, आत्मीयता स्नेहपूर्ण भाव एवं योग्य प्रथदर्शन के लिए मैं अतीव कृतज्ञ हूँ।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ॰ वसंत मोरे, प्रा॰ एम॰के॰ तिपले, प्रा॰सौ॰ एम॰एस॰ जाधव, तथा प्रा॰कु॰ रजनी भागवत जी का सहयोग तथा आशिर्वाद मेरे साथ रहे। उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के बॅ॰खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल तथा अन्य ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे फुफेरे भाई प्रा॰राजेंद्र हिरकुडे तथा भाभी प्रा॰ सौ॰ उज्वला पावरे (हिरकुडे) ने मुझे बार बार प्रोत्साहित एवं उत्साहित किया तथा महावीर महाविद्यालय के (बी॰ए॰बी॰एड्॰) हिन्दी विभाग के अध्यापक प्रा॰ राजेंद्र रोटे तथा प्रा॰सौ॰ एस॰एम॰पाटील मॅडम जी ने भी इस लघु-शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में अच्छा योगदान दिया तथा सहायता की इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

मेरे साथी रफिक बंदीवाले, भीमराव परापले, सुधाकर वाणी, एकनाथ पाटील, विश्वंभर कुलकर्णी, अनिल साळुंखे, प्रदिप पाटील, सुरेश खटकोळे का भी आभार प्रकट करता हूँ।

दादी माँ, माता-पिता, काका-काकियाँ, भाई-बहन, तथा अन्य मित्रोंकी सहाय्यता तथा शुभकामनाएँ मेरे साथ रही इसलिए मैं उनका हमेशा हमेशा के लिए ऋणी हूँ।

कल्पवृक्ष चॅरिटेबल ट्रस्ट, जयसिंगपुर संचलित वलीपडे हायस्कूल, वलीपडे के मेरे सभी अध्यापक साथी तथा ट्रस्ट के मॅनेजींग ट्रस्टी श्री शांतीनाथ (आण्णा) पाटील तथा ऑनररी सेक्रेटरी श्री माणगावे सर तथा अन्य महत्वपूर्ण सदस्यों का भी मैं सहृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने मुझे समय समयपर इस लघु-शोध-प्रबन्ध के लिए अवकाश प्राप्त करा दिया और सहकार्य किया।

अंत में प्रबन्ध का टंकलेखन तथा उसे सर्वांग सुंदर बनानेवाले श्री राजेंद्र मोहिते इनका मै आभार प्रकट करते हुए यह लघु-शोध-पबन्ध विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

आपका कृपापार्थी,

(श्री एस॰बी॰ आडके)
शोध-छात्र

कोल्हापुर ।
दिनांक : 30/4/84